
आलस्य और अलबेलापन - 31

अव्यक्त बापदादा :-

➡ _ ➡ संगमयुग की विशेषता ही है 'अतीन्द्रिय सुख' में झूलना। सदा खुशी में नाचना तो संगमयुगी बनकर और इस विशेषता का अनुभव नहीं किया तो क्या कहेंगे? इसलिए स्वयं को चेक करो कि किसी भी प्रकार के संकल्पों के बन्धन में तो नहीं हैं। चाहे व्यर्थ संकल्पों के बन्धन, चाहे ईर्ष्या द्वेष के संकल्प, चाहे अलबेलेपन के संकल्प, चाहे आलस्य के संकल्प, किसी भी प्रकार के संकल्प मन्सा बन्धन की निशानी हैं। तो आज बापदादा बन्धनों को देख रहे थे।

➡ _ ➡ मुक्त आत्मायें कितनी हैं? मोटी-मोटी रस्सियाँ तो खत्म हो गई हैं। अभी यह महीन धागे हैं। हैं पतली लेकिन बन्धन में बांधने में होशियार हैं। पता ही नहीं पड़ता कि हम बन्धन में बंध रहे हैं। क्योंकि यह बन्धन अल्पकाल का नशा भी चढ़ाता है। जैसे विनाशी नशे वाले कभी अपने को नीचा नहीं समझते। होगा नाली में समझेगा महल में होता खाली हाथ अपने को समझेगा राजा है। ऐसे इस नशे वाला भी कभी अपने को रांग नहीं समझेगा। सदा अपने को या तो राइट सिद्ध करेगा वा अलबेलापन दिखायेगा। यह तो होता ही है। ऐसे तो चलना ही है। इसलिए आज सिर्फ मन्सा बन्धन बताया। (02.12.1985)

➡ _ ➡ भुजा अर्थात् शक्ति। तो यह भी चेक करो कहाँ तक शक्तिशाली बने हैं? संकल्प शक्तिशाली, दृष्टि, वृत्ति शक्तिशाली कहाँ तक बनी है? शक्तिशाली संकल्प, दृष्टि वा वृत्ति की निशानी है। वह शक्तिशाली होने के कारण किसी को भी परिवर्तन कर लेगा। संकल्प से श्रेष्ठ सृष्टि की रचना करेगा। वृत्ति से वायुमण्डल परिवर्तन करेगा। दृष्टि से अशरीरी आत्म स्वरूप का अनुभव करायेगा। तो ऐसी शक्तिशाली भुजा हो! वा कमजोर हो? अगर कमजोरी है तो लेफ्ट हैं। अभी समझा राइटहैण्ड किसको कहा जाता है! भुजायें तो सभी हो। लेकिन कौन-सी भुजा हो? वह इन विशेषताओं से स्वयं को जानो।

➡ _ ➡ अगर दूसरा कोई कहेगा कि तुम राइट हैण्ड नहीं हो तो सिद्ध भी करेंगे और जिद्द भी करेंगे। लेकिन अपने आपको जो हूँ जैसा हूँ वैसे जानी। क्योंकि अभी फिर भी स्वयं को परिवर्तन करने का थोड़ा समय है। अलबेलेपन में आ करके चला नहीं दो कि मैं भी ठीक हूँ। मन खाता भी है लेकिन अभिमान वा अलबेलापन परिवर्तन कराए आगे नहीं बढ़ाता है। इसलिए इससे मुक्त हो जाओ। यथार्थ रीति से अपने को चेक करो। इसी में ही स्वकल्याण भरा हुआ है।

(16.12.1985)

➤➤ संगठन

➡ _ ➡ संगठन में हम बहुत ज्यादा सबके कनेक्शन में रिलेशन में आते हैं

→ संगठन में रहने से बहुत सारी बातें सुनने को भी मिलती हैं, समझने को भी मिलती हैं और अनुभव करने भी मिलती हैं

■ संगठन को उन्नति का आधार समझना है

➤➤ सिंपल ओर सेम्पल कौन बन सकता है?

➤➤_ ➤➤ अगर हम दूसरों को देखते हैं तो हमारी उन्नति ठप हो जाती है, ओर हम आगे बढ़ना चाहते हुये भी नई बढ़ सकते हैं

→ क्योंकि बहुत सारी बातों का हमारे ऊपर ओवरलोड हो जाता है

■ दूसरों को देखना, वो क्या कर रहा है? कैसे कर रहा है? अगर इसमें हम पड़ते हैं

■ तो फिर हम अपने को ही भूल जाते हैं, की हमें क्या करना है

► हमारी तपस्या ओर साधना में यह सब बातें विघ्न रूप बनती हैं

➤➤_ ➤➤ सेम्पल बनकर के अगर दूसरों को अनुभव कराने का अगर लक्ष्य रखेंगे तो, हमको फायदा ही फायदा होगा

➤➤ शक्तिशाली आत्माओं की निशानी

➤➤_ ➤➤ शक्तिशाली आत्मा के ऊपर संकल्प में भी किसी भी आत्मा का प्रभाव पड़ नहीं सकता है

→ वह आत्मा हर बात को पॉसिटिव रूप से लेंगी

■ इस संस्कार की वजह से उसे किसी भी बात की चिंता नहीं रहती है

■ वो निश्चिन्त रहता है

➤➤_ ➤➤ परिस्थिति ओर समस्या तो आने ही वाली है उसके लिए अपने को अभी से ही तैयार रखना है

➤➤_ ➤➤ हमारी उन्नति कहा हो रही है कितने तक हो रही है यह चेकिंग मुख्य रूप से करना है

→ हर दिन चेकिंग करने से हमें मुख्य रूप से बहुत फायदा मिलता है

➤➤ योग

➤➤_ ➤➤ चिंतन के बिना योग करने बैठते हैं, तो योग इतना शक्तिशाली नहीं होता है

→ क्योंकि मन को तो कुछ न कुछ चाहिये ही

■ मन का काम है संकल्प क्रिएट करना

■ बुद्धि का काम है विजन क्रिएट करना

■ संकल्पों को इमेज अर्थात चित्र नहीं देंगे तो उनका योग लंबा समय तक नहीं चल सकता है

► चित्र बिना योग लगना बहुत मुश्किल है

► 5 मिनट भी अगर दिल से याद कर लिया तो विकर्म विनाश हो ही जायेगा
